चुनाव चातुरी धुरी

चुनाव चातुरी धुरी, बनी न आज जो खरी।
मरी स्वतन्त्रता खड़ी, निगाह गीध की पड़ी।।

चौदहवाँ लोक सभा चुनाव निकट है। विधान सभा चुनाव भी होंगे, कई मध्यावधि चुनाव भी हो चुके हैं। प्रत्येक चुनाव आन्दोलन देश को लूटने का आन्दोलन होता है। राजनीतिक पार्टियों में कुछ हिन्दुवादी पार्टियाँ भी हैं, धर्मनिरपेक्षता की घुट्टी इन्होंने भी पी है। धर्मनिरपेक्षता आज उतनी ही बुरी है जितना मुस्लिमों का जेहाद और ईसाइयों का क्रास पर विश्वास। इसे हम पिछले सारे चुनाव नतीजों के दर्पणों में ठीक से पहचान चुके हैं। देश को लूटने की एक बुरी नीयत सब में भरी है, कोई भी राजनीतिक संगठन ऐसा नहीं है जिस पर यह भरोसा किया जा सके कि यह देश की जनता में वह रक्षात्मक सोच विकसित करेगा जिसके पीछे शिक्षा का स्तर ऊँचा करने का आन्दोलन हो, शिक्षा में आमूल परिवर्तन का आन्दोलन हो, वास्तव मानवतावाद का चिन्तन जन-जन में विकसित हो, प्रत्येक जन के मन में धन से ऊपर भगवान् का महत्त्व अंकित हो, धन के लिए किसी भी प्रकार की धाँधली करने की योजना कोई न बना पाये। प्रत्येक वादी को अति शीघ्र न्याय सुलभ कराने का त्वरित उपाय हो, वाणिज्य में कोई छल, दम्भ न हो, बिचौलियों को धन न जाये, रिश्वत लेना देना सब लोग बुरा मान लें। देश की सारी विधाओं की सुरक्षा के बहुमुख उपाय हों। जाति, वर्ण, वर्ग सम्प्रदाय महजबों को कभी भी चुनावों का या कहीं भी किसी गन्दी राजनीति का हथकण्डा कोई न बना सके। आज तक जनहित में जो न हो सका, जो शुरु से जरूरी रहा है और अब ज्यादा ही जरूरी हो गया है वह किया जाये। सारे मत पन्थों महजबों सम्प्रदायों की एवं वर्ग-वर्ण जातियों की शाश्वत एकता जन-जन के हृदय में बैठाने की योजना व्यापक रूप से जारी की जाये। दम्भमय भेदवादों को क्रम से मिटा कर प्रामाणिक एकता हर व्यक्ति के हृदय में बैठाने का ठोस उपाय हो। वह उपाय है वह तात्त्विक शिक्षा जिसके अभाव में निराधार भेदवाद बढ़कर वर्ग संघर्ष बना करते हैं। नीच नेता वर्ग संघर्षों को वोट लूटने का एक मात्र माध्यम मानते हैं। उनके लिए ही रिश्वतबाजी, आतंकी समूह, न्याय में विलम्ब मन्त्रिमण्डल में बेईमानी, देशहित की अनदेखी धर्मविमुखता वाणिज्य में दम्भ, और शिक्षातन्त्र में व्यापक प्रदूषण बनाये रखते हैं।

उक्त आठ बुराईयाँ केन्द्रीय प्रान्तीय मन्त्रिमण्डल और मतदाता समूह दोनों में चिरकाल से रह रही हैं। इनमें पूर्व पूर्व बुराई को बल उत्तर-उत्तर बुराई से मिलता है, सारी बुराइयों का केन्द्र कुशिक्षा ही है। उनका विश्व इतिहास लिखा पढ़ा जा सकता है, उन्हें पढ़ कर छोड़ देने के बजाय बिना पढ़े भी जड़ से मिटा देने का उद्यम होना चाहिये। क्या ?है देश में ऐसा कोई राजनीतिक संगठन जो ऐसा उद्यम सोचता, चाहता हो ?कोई नहीं है, न जल्दी में उभरने वाला है।

गधे कहीं भी मिल जाते हैं, जड़े दूब की खो जाते हैं।
उनके वोट ऊँट पाते हैं, घोड़े अरबी रह जाते हैं।।

भारत में लुटेरे गोभक्षी इस्लामी शासन की पैठ हुई धर्मज्ञ नरपक्षियों के अभाव में, जंगली सूवरों के, लोमड़ियों के सहयोग से। पठानों की पैठ हुई मुगलों के खुद मिटने से। उन्हें भगाने वाले अंग्रेजों के सहयोगी हुए नीति की सूक्ष्म परख न रखने वाले कुछ देशी सत्ताधारी। अंग्रेजों के हाथ से आजादी मिली सिर्फ गदही की और थोड़ी-थोड़ी इनसान की पहचान रखने वाले धर्मविमुख गदहों को। गदहों में कुछ धारीदार भी होते हैं, वे पाप भार नहीं ढोते, इसी से प्रकृति उनकी तादाद कम ही रखती है। सुनते हैं आजादी के समय जनसंख्या 35 करोड़ थी और अब अरब पार कर गयी है। जन तो देखने में बहुत मिलते हैं किन्तु वोट डालने के सिवा एक ही काम वे और जानते हैं जिससे उनके जैसे बिना पूंछ वाले जन्तु बढ़ते हैं। मछली पालने वाले लोग खाने के लिए मछली पालते हैं। पत्थर बटोरने वाले लोग पत्थरदिमाग वस्त्रधारी वनमानुष पालते हैं। देश को कैसे मानव चाहिये, उनका जन्म शिक्षा संस्कार सत्कर्म कैसे हो सकें यह सोचने वाला कोई नेता विनेता ढूंढे नहीं मिलता, धरती आज बहुत से कीमती बीज निगल चुकी है। सुनते हैं परमात्मा को एकबार परिपूर्ण मानव बनने का शौक हुआ, प्रकृति मण्डल में परिपूर्ण मानव तो होता ही नहीं तो वे कैसे होते ?उन्होंने सोचा कि पृथ्वी का मानव कर्मजाल से ग्रस्त रहता है इससे बहुधा विधर्मी होता है किन्तु मैं तो अपने संकल्प से परिपूर्ण मानव बनूँगा। सो ठीक था किन्तु परमात्मा भी शायद भूल गये कि उनकी बनायी प्रकृति मानव की पूर्णता से बहुत चिढ़ती है, परिपूर्णता तो वह पचा ही नहीं सकती। परमात्मा अपनी बनायी अपने अधीन रहने वाली प्रकृति की कितनी परवाह करते, वे अपने चारों व्यूहों वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध को लेकर सम्राट् दशरथ के आंगन में उतर पड़े, माता-पिता को समझा दिया कि पुरानी तपस्या के जरिये परात्पर पूर्ण ब्रह्म परमात्मा चार पुत्र बन गये हैं। इधर प्रकृति को पता चला कि परिपूर्ण मानव ऊपर से उतरा है तो उसे अधिकारों से वंचित करने की साजिश शुरु की। मन्थरा दलितों की गृहिणी थी देवताओं ने उसका दिमाग फेरा, कैकयी को स्वार्थ की डोरी से घेरा और दशरथ का रथ एक ही दिशा में घुमा दिया, राजा बनते-बनते संकर्षण लक्ष्मण के साथ वासुदेव राम तापस वनवासी हो गये। ब्रह्म पर माया हावी हो गयी। मायावादी वेदान्ती यही तो मानते हैं। माया के सामने ब्रह्म के गुणों का कोई अर्थ नहीं, उसे गुणहीन मानना ही ठीक है। धर्म भले कुछ अच्छी चीज होगी लेकिन हमारे देश के ऊँचे पदों पर तो विधर्मी दलित कुलकमल दिवाकर ही बैठेंगे, तभी तो हवाले घोटाले काण्ड होंगे। कोई कहेगा कि तिवारी भी तो घोटालों में बदनाम हुए थे, सो ठीक है, वे अघोषित दलित थे, कुछ को प्रकृति ने दलित बनाया, कुछ को अंग्रेजों ने नेहरू जैसे हजारों गण्य मान्य दलित बनाया।

जब त्रेता में भी दलित मन्थरा ने विग्रहवान् धर्म राम का शासन उखाड़ने का प्रयास किया और राम को देशनिकाला दे दिया तो आज घोर कलि में कहना क्या है। मन्थरा कैकयी दशरथ राम की कथा धर्मविमुखता की यानी राक्षसी शासन की और उसके निर्मूलन की कथा है। शासन में धर्म का त्याग होने से अधर्म स्वयम् आ जाता है, तब विप्रकन्या शूद्र की पत्नी या शूद्र की कन्या विप्रपत्नी बनती है और धर्महीन शासन से पुरस्कार पाती है। समाज में वर्णाश्रम व्यवस्था धर्मानुष्ठान के लिए होती है गुणों को सम्मान पूर्वक विकसित करने के लिए होती है। यह सारे विश्व में स्पष्ट या अस्पष्ट रूप में है ही, इसके बिना समाज में सामंजस्य हो ही नहीं सकता किन्तु मानव इस रहस्य को अब समझने की स्थिति में कम ही रह गया है। हम किसी प्राकृतिक नियम को भूल जायें तो प्रकृति भी अपने नियम नहीं भूल जाती। स्वास्थ्य के नियमों से बहुत ज्यादा ही जरूरी होते हैं धर्म के नियम। "धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायाम्" धर्म पहले भी दुर्बोध रहा है। ज्ञान के अभाव में उसका पालन कैसे हो। किन्तु समयानुसार कम भी धर्म का पालन सुखमय जीवन के लिये आवश्यक है। धर्म को तह तक जानकर उसमें निष्ठा रखना प्रत्येक मानव के लिए, उसके जीवन के लिए आक्सीजन की तरह अनिवार्य आवश्यकता है। भारत का वर्तमान भेड़-तन्त्र-शासन विश्वमानव को आदर्श पशु बनाने पर तुला है, उसे पता नहीं है कि पशुधर्मों के अभाव में कोई भी पशु मानव को अपनाने के लिए तैयार नहीं है। पशुओं का चारा चोरी से चर कर भी मानव पशु नहीं बन पाया। उसे अपने मानव समाज में ही रहना पड़ रहा है, धर्म से हटने से उसे जेल में या जेल के केस में या अस्पताल में या असाध्य कैंसर जैसे रोग में मृत्युयुक्त जीवन झेलना पड़ रहा है।

अधर्ममार्ग का अन्तिम पड़ाव आत्महत्या है, इसके कई रूप और तरीके हैं। एक अफीमची अफीम के कारण सूखता जा रहा है, दूध उसे नहीं मिलता, भोजन के बाद मेहनत से अफीम तैयार करके पीता है फिर सो जाता है, अर्थ लाभ उसे नहीं होता, फटी धोती लपेट कर समय काट रहा है, दिनचर्या में अफीम खरीदना बनाना और पीकर सो जाना ही प्रमुख है। हम उसके जीवन की आलोचना करें, सुधार का सुझाव दें तो वह नाराज होगा फिर हमें मारने के लिए नशे से दुर्बल, काँपते हाथ से पतली छड़ी उठाकर हमारी ओर दौड़ेगा, हमसे पहले ही उसे किसी रोड़े से टक्कर हो सकती है। अफीमची के जीवन से मौत खेलती रहती है, उसका जीवन कारागार से कम संकटमय नहीं है। जिस देश से धर्म जिस अनुपात से हटता है, नशेबाजी उसमें उसी अनुपात से घुसती है। चीन का निकट अतीत इसका अकाट्य उदाहरण है। धर्मविमुखता अधर्म का न्यौता ही है, अधर्म मृत्यु का ही दूसरा नाम है। महंगी अंग्रेजी शराब में देशी सस्ती शराब की बदबू नहीं होती, पर इतना नशा तो होता ही है कि उसे पीकर कोई देवालय की दीवार पर खड़ा मूत सके। अंग्रेजी शिक्षा शराब का नशा बढ़ने पर मायावती की तरह आदमी बोलेगा कि देवालय ध्वस्त करके वहाँ पेशाब खाना बनवा दिया जाये। मायावती की आवाज देश के लाखों दलितों की आवाज है। वृक्ष से दलित दल कभी भी अपनी हरीतिमा बढ़ा नहीं सकता, धीरे-धीरे सूखकर अपना अस्तित्व खो देना ही उसकी नियति होती है। दलित संज्ञा अन्धे की श्रवणशक्ति हरने जैसी है, यह संज्ञा कभी भी अभ्युदय की दिशा नहीं पकड़ा सकती। शब्दों की बड़ी शक्ति होती है। हरिजन शब्द में भगवान् का नाम जुड़ा था, वह धर्म विमुखों को खलता था, धर्म का तनिक भी आभास न हो इसी विचार से यह नया नाम नयी दुर्बुद्धियों ने चुना है। "विवेक भ्रष्टानाम् भवति विनिपातः शतमुखः" विवेक से हटने पर वह विवेक स्वयं आकर नहीं लिपटता बल्कि उत्तरोत्तर अन्तहीन पतनमय मृत्यु ही मिलती है।

इण्डियन कांग्रेस, आर.एस.एस. और उनके पुछल्ले अपने सीमित अतीत की भूलों, विफलताओं, फिसलनों को एवं विकास के नाम पर हो रहे घातक विनाशों को देखने सुनने समझने का समय नहीं निकाल पा रहे, उन्हें तो अपने-अपने धन्धों की अन्धी प्रगतियाँ अंकित करनी हैं जिससे वैसी ही प्रगतियाँ आगे भी जारी रहें, हर नशेबाज अपने नशे में थोड़ी बढ़ोत्तरी चाहता है, धर्मविमुख हर नीच नेता व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए दिखावे की पार्टी से दिखावे को जुड़ा होता है। कहने को सब देशसेवी होते हैं लेकिन उनको अब कौन नहीं जान चुका है कि ये घोर पाखण्डी बेईमान देश का धन चुराने के लिये किसी पार्टी का नाता बताते हैं। ठीक ही कहा है कि—

चिन्ता है किसे देश की, स्वारथ में सब अन्धे हुए।
देशभक्ति देश सेवा, आज सब धन्धे हुए।।

फिर भी बिगाड़ के इतिहास में सुधार के भी अनुच्छेद होते हैं, परख के सामने रहकर कभी क्या रत्न खोते हैं ?देखिये—

बिगड़ती ही नहीं, रुक कर, सुधरती भी प्रकृतियाँ है,
सुधरने के लिए होती बहुत सारी विकृतियाँ है।
दिवस की चाह रखकर ही, निशा उपवास करती है,
निकट सन्ध्या उषा भा से यही अहसास करती है।।

देखने में देश अवश्य ही अन्तिम पतन की ओर बढ़ रहा है किन्तु निन्दनीय पराभव से बचने के लिए अन्दर ही अन्दर ऊपर की ओर कढ़ भी रहा है। शरीर का कठिन रोग विकारों को बाहर फेंकने की प्रक्रिया होती है, बिना गोलियों के भी रोग जाते हैं। बाहरी मदद के बिना ही हम स्वयं अर्जित पराभवों के दलदल से निकलेंगे, सर्वतोमुख आदर्श जीवन जियेंगे। हममें अपार शक्ति है, हमारे हनुमान हमारे अन्दर बाहर हमारी मदद की तैयारी कर रहे हैं। राज्य चलाने का अपना तजुर्बा 65 साल तक हमने देखा। एक अच्छे प्रशिक्षण के अभाव में हमारे सारे साल जन-जन को सालते ही निकल गये। हम देख रहे हैं कि हमारे सारे प्रशिक्षण आतंकी प्रशिक्षणों से मात खाते आ रहे हैं, उसका खास कारण है हमारा रिश्वती कायरपना, इसकी घुट्टी हमें सरकारी तन्त्र ही पिलाते हैं। आतंकी यह घुट्टी नहीं पीते, वे हमारी कमजोर नसें पहचानते हैं, शिकारी शिकार की असावधानी पर गौर करता और मार डालता है। हम अपनी ही बुराइयों से अपनों के द्वारा अपने ही घर हर रोज मारे जा रहे हैं। अपनी जड़ता से ही हम विदेशी भेड़ियों के गुलाम रहे और अब गदहों की तानाशाही झेल रहे हैं। मानवता हम से रूठ कर विदेशों में जा बसी है। हमें डूब मरने के लिये चुल्लूभर पानी नहीं मिल रहा।

जैसे आतंकी जंगलों में अपना ठोस प्रशिक्षण चलाते हैं, वैसे हम भी अपने घरों में राष्ट्रिय प्रशिक्षण चला सकते हैं। सरकार यदि ऐसा प्रशिक्षण चलाये तो आरक्षण, रिश्वत, नकल, परीक्षा का सरलीकरण, तैंतीस प्रतिशत में पास जैसे खास दोष आकर प्रशिक्षण को पहले ही दिन खा जायेंगे। आजादी के लिये बहुत त्याग तप हुए थे, समाज गलत काम तो खूब जानता है, यह राष्ट्रिय काम भी कर सकता है। राष्ट्र का सुधार बिना खर्च के भी हो सकता है। एक दिन गान्धीवाद एक मखौल था, आगे चलकर वही व्यापक आदर्श हो गया, दम्भ पाखण्डों के प्रवेश से दुबारा वह अब एक मखौल बन रहा है, समाजसेवी सारी संस्थायें अब जनभावना से गिर चुकी हैं सिर्फ हमारे प्रमाद अकर्मण्यता, लोभ बेईमानी व रिश्वतखोरी से।

मन से धन को दूर कर, रख लो शाश्वत बोध।
कर लो पाप विचार का, अपने में प्रतिशोध।।

संकलनकर्ता
विष्वक्सेनाचार्य

सत्सम्प्रदाय प्रकाशन
निवास : श्रीरंग मन्दिर, श्रीधाम वृन्दावन

मुद्रण-संयोजक : श्रीहरिनाम प्रेस, बाग बुन्देला, लोई बाजार, वृन्दावन